शब्द-रचना

हिन्दी में शब्द-रचना उपसर्ग, प्रत्यय तथा समास के आधार पर होती है। यहाँ संक्षेप में इन्हें लिया जा रहा है।

उपसर्ग

उपसर्ग उस भाषिक इकाई को कहते हैं जिसका भाषा-विशेष में स्वतन्त्र प्रयोग न होता हो, किन्तु जिसे विभिन्न प्रकार के शब्दों के आरम्भ में जोड़कर शब्दों की रचना की जाती हो। जैसे—कु+कर्म = कुकर्म। यहाँ 'कु' उपसर्ग है। हिन्दी में तीन प्रकार के उपसर्गों का प्रयोग होता है—

तत्सम उपसर्ग—जो संस्कृत से ज्यों-के-त्यों हिन्दी में ले लिए गए हैं। जैसे—अति, अधि, अनु, अप, अभि, अव, आ, उत् उप, दुः, निः, परा, परि, प्र, प्रति, बहु, वि, सम् सह, सु आदि।

तद्भव उपसर्ग—जो संस्कृत के उपसर्गों या शब्दों से ध्वनि की दृष्टि से कुछ परिवर्तित होकर विकसित हुए हैं तथा जिनका हिन्दी में स्वतन्त्र प्रयोग नहीं होता किन्तु शब्द-रचना के लिए जो प्रयुक्त किए जाते हैं। जैसे—औ, क, दु, नि, पर, स आदि।

विदेशी उपसर्ग—जो उपसर्ग विदेशी भाषाओं से आए हों। हिन्दी में विदेशी उपसर्ग मुख्यतः केवल फ़ारसी तथा अरबी के हैं। जैसे—अल, दर, ब, बा, ले आदि। आगे हिन्दी में प्रयुक्त मुख्य उपसर्ग अर्थ और प्रयोग के उदाहरणों के साथ दिए जा रहे हैं—

अ : (१) प्रतिकूल—अहित, अधर्म; (२) रहित, हीन—अदृश्य, अज्ञान, अशांत, अबोध, अथाह; (३) निषेध—अपेय, अखाद्य।

अधि : (१) अधिक—अधिमास ; (२) श्रेष्ठ—अधिपति; अधिनायक, अध्यात्म' (३) अधिकारपूर्वक—अधिग्रहण।

अन : (१) अतीत या परे—अनगिनत, अनमोल; (२) अभाव—अनाचार, अनमेल, अनपढ़; (३) प्रतिकूल—अनरीति।

अनु : (१) प्रत्येक—अनुदिन, अनुक्षण; (२) समान—अनुरुप ; (३) बाद का—अनुवाद ; (४) पीछे—अनुचर, अनुगमन, अनुकरण।

अंतः-अन्तर-अंतस् : (१) भीतर—अंतस्सलिला, अंतस्साक्ष्य, अंतर्दशा, अंतःकरण; (२) सभी—अंतर्राष्ट्रीय; (३) बाहर—अंतर्जातीय।

अप : (१) बुरा—अपशब्द, अपकीर्ति; (२) अनुचित—अपव्यय, अपहरण; (३) विपरीत—अपमान; (४) नीचे—अपकर्ष, अपभ्रंश।

अव : (१) घटना—अवमूल्यन; (२) अभाव—अवचेतन; (३) उलट—अवगुण ; (४) नीचे—अवरोहण, अवनत।

आ : (१) ऊपर—आरोहण; (२) तक—आजानु, आसमुद्र, आभरण; (३) आदि से अन्त तक—आजीवन; (४) आदि से अब तक—आजन्म।

आवि-आविर्-आविष् : बाहर—आविर्भाव, आविर्भूत, आविष्कार।

Scanned by TapScanner

(१) अधिक—उत्तप्त; (२) मुक्त—उद्दंड; (३) प्रकट—उद्घोष; (४) ऊपर—उत्कर्ष।

उत :

उप : (१) नीचे—उपमंत्री, उपप्रधान, उपसभापति; (२) गौण—उपपुराण, (३) दूसरा—उपनाम, उपपति; (४) अनुकूल पक्ष में—उपकार; (५) पहले—उपसर्ग; (६) और आगे—उपभेद।

कु : (१) बुरा—कुकर्म, कुमार्ग, कुपात्र, कुचाल, (२) अशुभ—कुदिन, कुबोल।

ग़ैर : निषेध—गैरहाज़िर, ग़ैरसरकारी।

दर : में—दरअस्ल, दरम्यान।

दु : बुरा—दुकाल, दुराज।

दुर्-दुः—दुष्-दुस् : (१) बुरा—दुर्दिन, दुर्दशा, दुर्गुण, दुष्कर्म, दुश्चरित्र; (२) कठिन—दुर्बोध, दुर्गम, दुर्निवार, दुस्तर; (३) अभाव—दुर्बल।

ना : नहीं—नापसंद, नाउम्मीद, नालायक।

नि : (१) नहीं—निडर, निपूता, निकम्मा, निहत्था, निरोगी; (२) पूर्णतः—निखालिस (क्षेत्रीय तथा अमानक प्रयोग); (३) समूह—निकर; (४) नीचे—निपतित; (५) आदेश—निदेश।

निर : नहीं, निषेध—निरर्थक, निराहार, निरंकुश, निरपराध।

पर : (१) बाद का—परवर्ती, परसर्ग; (२) दूसरा—परलोक, परपुरुष; (३) प्र, पूर्व का—परदादा, परपोता; (४) दूसरे का—परोपकार; (५) दूसरे को—परोपदेश।

परा : विपरीत—पराजय।

परि : (१) आसपास, चारों ओर—परिभ्रमण, परिक्रमा; (२) पूरी तरह—परिपक्व, परिपूर्ण; (३) अधिक-परिश्रम

पुनः—पुनर् : फिर—पुनर्जन्म, पुनरुक्ति, पुनर्विभाजन।

प्र : (१) विशेष—प्रख्यात; (२) ऊपर, पहले के—प्रपितामह; (३) नीचे बाद का—प्रपौत्र; (४) बड़ा—प्राचार्य, प्राध्यापक, प्रबल; (५) उप—प्रभेद, प्रभाग।

प्रति : (१) विरुद्ध—प्रतिरोध, प्रतिवाद, प्रतिस्पर्धा; (२) सामने—प्रत्यक्ष; (३) बदले में—प्रत्युपकार

ब : (१) सहित, साथ—बखूबी, बखैरियत; (२) के द्वारा—नज़रिये; (३) से—खुद-ब-खुद; (४) तुलना में—बनाम; (५) अनुसार, मुताबिक—बदस्तूर।

बद : बुरा—बदबू, बदनाम बदक़िस्मत।

बर : (१) पर, ऊपर—बरवक्त; (२) अलग—बरतरफ़ ; (३) निश्चय—बरक़रार।

बहिः—बहिष्-बहिर् : बाहर का—बहिरंग, बहिष्कार, बहिःसाक्ष्य।

बा : (१) सहित, के साथ—बाक़ायदा, बाअदब; (२) वाला—बाआबरू।

बिला : बिना—बिलानाग़ा, बिलाशक।

बे : (१) बिना, रहित—(i) बेईमान, बेरहम, बेचारा, बेइज़्ज़त, बेक़ायदा, बेबुनियाद; (ii) बेढंगा, बेखटके, बेडौल, बेजोड़, बेढब; (२) स्वार्थे—बेफ़जूल (क्षेत्रीय तथा अमानक प्रयोग)।

ला : बिना, रहित—लाइलाज, लापता, लापरवाह, लाजवाब, लावारिस।

वि : (१) बिना—वियोग; (२) आधिक्य विकराल; (३) विशेष—विगत; (४) स्वार्थे—विभाग; (५) विपरीत—विक्रय; (६) दूसरा—विदेश, विकल्प।

स : (१) सहित—सपरिवार, सजीव, सकुशल; (२) एक ही का—सगोत्र, सजातीय; (३) अच्छा, सु—सपूत।

Scanned by TapScanner

सत्-सद् : (१) अच्छा—सदाचार, सत्कर्म, सद्गति, सद्गुण, सच्चरित्र, सज्जन; (२) सच्चा-सद्गुरु।

सं : (१) सम्यक् रूप से—संयुक्त, संतोष, संस्तुति, संयोग; (२) स्वार्थे—संप्राप्ति।

सर : (१) मुख्य—सरपंच; (२) स्वार्थे—सरहद।

सह : साथ—सहगमन, सहचर, सहभाषा, सहभागी, सहकारी।

सु : (१) अच्छा—सुगन्ध, सुवसर सुयश, सुपात्र, सुव्यवस्थित, (२) सुन्दर—सुदर्शन, सुकेशी; (३) सरल—सुकर सुगम; (४) बहुत—सुदीर्घ, सुसम्पन्न; (५) शुभ—सुसमाचार, सुघड़ी, सुदिन।

स्व : (१) अपना—स्वदेश, स्वराज्य, स्वतन्त्र, स्वभाव; (२) स्वार्थे—स्वरूप; (३) अपने, स्वयं—स्वचालित।

हम : (१) एक—हमराह, हमवतन, हमउम्र; (२) समान—हमदर्द।

प्रत्यय

प्रत्यय उस भाषिक इकाई को कहते हैं जिसका प्रयोग स्वतन्त्र रूप से न हो, और जिसे किसी और भाषिक इकाई के अन्त में जोड़कर शब्द-रचना की जाय। जैसे : सुन्दर + ता = सुन्दरता। यहाँ 'ता' प्रत्यय है। हिन्दी में चार प्रकार के प्रत्ययों का प्रयोग होता है—

तत्सम—जैसे ता, आलु, जीवी, इक, ई, शः, अनीय, तः इष्ठ, आ, इमा।

तद्भव—जैसे आई, आहट, एरा, नी, आइन, आलू आदि।

देशज—जैसे अक्कड़, अंकू, अड़, आटा आदि।

विदेशी—जैसे आना, इयत, मंद आदि।

हिन्दी के व्याकरणों में प्रत्यय के 'कृत्' और 'तद्धित' दो वर्ग बनाए गए हैं। वस्तुतः यह वर्गीकरण संस्कृत का है और हिन्दी पर लागू नहीं होता, क्योंकि ऐसे भी प्रत्यय हैं जो 'कृत्' और 'तद्धित' दोनों ही रूपों में प्रयुक्त होते हैं। जैसे : 'आई'। एक तरफ़ तो यह धातु में जोड़ा जाता है (सिलाई, खुदाई, लड़ाई, पढ़ाई, चढ़ाई, आदि), अतः कृत् प्रत्यय है और दूसरी ओर अन्य शब्दों में भी जोड़ा जाता है (खुदाई, कठिनाई, सफ़ाई, चतुराई), अतः यह तद्धित प्रत्यय भी है। वस्तुतः हिन्दी प्रत्ययों के इस प्रकार के वर्गीकरण की कोई उपयोगिता नहीं है और न कोई औचित्य ही है।

यहाँ हिन्दी के कुछ मुख्य प्रत्यय दिए जा रहे हैं—

अन्त (किया हुआ) —गढ़न्त, रटन्त।

अक्कड़ (वाला)—घुमक्कड़, पियक्कड़।

आ (स्त्री० प्रत्यय)—माननीया, आदरणीया, प्रिया, सुता।

आई (भाववाचक संज्ञा का प्रत्यय)—पढ़ाई, लिखाई, बुराई, भलाई, कमाई।

आऊ (वाला)—कमाऊ, बिकाऊ, पंडिताऊ, टिकाऊ।

आडी—(वाला)—खिलाड़ी, जुआड़ी।

आना (परम्परा, दण्ड, प्रति)—घराना, जुर्माना, रोज़ाना, सालाना।

आनी (स्त्री० प्रत्यय)—जिठानी, देवरानी, मास्टरानी, मेहतरानी।

आपा (भाववाचक संज्ञा का प्रत्यय)—बुढ़ापा, रँड़ापा, मुटापा।

आर (करने वाला)—सुनार, लुहार, कुम्हार, चमार।

Scanned by TapScanner

आरी (करने वाला)—पुजारी, भिखारी।

आलु (वाला)—दयालु, लज्जालु, श्रद्धालु, कृपालु।

आलू (करने वाला)—झगड़ालू।

आवट (भाववाचक संज्ञा का प्रत्यय)—मिलावट, बुनावट, बनावट, रुकावट।

आस (इच्छावाचक संज्ञा का प्रत्यय)—छपास, लिखास।

आहट (भाववाचक संज्ञा का प्रत्यय)—घबराहट, भलमनसाहत, चिल्लाहट।

इक (विशेषण का प्रत्यय)—भाषिक, दैनिक, सामाजिक, साहित्यिक, 'व्यावहारिक, वैदिक, नैतिक, भौगोलिक, पौराणिक (इसे जोड़ने में प्रथम अक्षर के अ को आ; इ, ई, ए को ऐ तथा उ ऊ, ओ को औ कर देते हैं।

इत (युक्त)—पुष्पित, आधारित, पुलकित, हर्षित।

इन (स्त्री० प्रत्यय)—जुलाहिन, साँपिन, जमादारिन, लुहारिन।

इमा (भाववाचक संज्ञा का प्रत्यय)—महिमा, कालिमा, लालिमा, नीलिमा।

इयत (भाववाचक संज्ञा का प्रत्यय)—आदमियत, इन्सानियत, असलियत, खासियत।

इयल (वाला)—दढ़ियल, लठियल, मरियल, सड़ियल।

इया (लघुत्वबोधक तथा स्त्री प्रत्यय)—लुटिया, बुढ़िया, चुहिया, खटिया : (वाला)—पुरबिया, कनौजिया, दीवालिया, कलकतिया, बम्बइया।

इल (वाला)—फेनिल, उर्मिल, जटिल।

ई (स्त्री प्रत्यय)—घोड़ी, लड़की, नानी, चाची; (वाला)—घमंडी, लालची, ऊनी, सूती, जापानी, राजस्थानी, हिन्दुस्तानी रूसी; (भाववाचक संज्ञा का प्रत्यय)—मास्टरी, प्रोफ़ेसरी, चौड़ाई, सफ़ेदी।

ईय (वाला)—स्वर्गीय, भारतीय, शासकीय।

ईला (वाला)—सुरीला, पथरीला, चमकीला, खर्चीला।

ऊ (वाला)—टालू, चालू, जानमारू।

एरा (वाला) चचेरा, ममेरा, लुटेरा, सँपेरा।

कार (लिखने या बनाने वाला)—साहित्यकार, कहानीकार, नाटककार, चित्रकार, मूर्तिकार; (वाला)—जानकार।

खोर (खानेवाला)—सूदखोर, घूसखोर, रिश्वतखोर, हरामखोर।

गी—जिंदगी, नामजदगी, मेहरबानगी।

गर (वाला)—जादूगर, रफूगर, बाज़ीगर।

ची (वाला)—तबलची, तोपची, अफ़ीमची, मशालची, खजांची।

ज (जन्मा हुआ)—जलज, पंकज, वारिज, अनुज, अंडज, स्वेदन।

जीवी (जीनेवाला)—दीर्घजीवी, अल्पजीवी, परजीवी, बुद्धिजीवी।

ज्ञ (जानने वाला)—विशेषज्ञ, मर्मज्ञ, अल्पज्ञ, अज्ञ, विज्ञ, प्रज्ञ।

तम (सबसे अधिक)—सुन्दरतम, श्रेष्ठतम, उच्चतम।

तर (तुलना में ऊँचा, बड़ा अथवा छोटा आदि)—उच्चतर, गुरुतर, निम्नतर।

Scanned by TapScanner

तः (क्रियाविशेषण का प्रत्यय)—अंशतः, मूलतः, स्वतः, यथार्थतः सामान्यतः, वस्तुतः।

तया (क्रियाविशेषण का प्रत्यय)—सामान्यतया, मुख्यतया, साधारणतया।

ता (भाववाचक संज्ञा का प्रत्यय)—सुन्दरता, कोमलता, आवश्यकता, प्राचीनता, नवीनता, लघुता, ममता।

त्व (भाववाचक संज्ञा का प्रत्यय)—महत्त्व, कवित्व, सतीत्व, अमरत्व, व्यक्तित्व।

दान (आधार)—इत्रदान, गुलदान, पीकदान, क़लमदान।

दार (वाला)—दूकानदार, ईमानदार, मालदार, खुशबूदार।

नाक (वाला)—ख़तरनाक, खौफ़नाक, दर्दनाक, शर्मनाक।

पन (भाववाचक संज्ञा का प्रत्यय)—बचपन, कालापन, पागलपन।

बाज़ (वाला)—चालबाज, पतंगबाज़, मुकदमेबाज, धोखेबाज़, बटेरबाज़।

मंद (वाला)—अक्लमंद, दौलतमंद, ज़रूरतमंद।

य (भाववाचक संज्ञा का प्रत्यय)—शौर्य, लालित्य, सौंदर्य, आधिक्य।

वान (वाला)—गुणवान, दयावान, धनवान, बलवान।

सार (वाला)—खाक़सार, शर्मसार।

समास

'समास' दो शब्दों से मिलकर बना है : सम् (पास) + आस (रखना, बैठाना) = समास। 'समास' उस प्रक्रिया को कहते हैं जिसमें दो या अधिक शब्द मिलाकर उनके बीच के सम्बन्धसूचक आदि शब्दों का लोप करके नया शब्द बनाते हैं। जैसे—दही में का या दही में पड़ा हुआ बड़ा = दहींबड़ा, घोड़ा-युक्त = गाड़ी = घोड़ागाड़ी। समास के दोनों पदों (शब्दों) को क्रमशः पूर्वपद तथा **उत्तरपद** कहते हैं। उपर्युक्त उदाहरणों में 'दही' तथा 'घोड़ा' पूर्वपद हैं और 'बड़ा' तथा 'गाड़ी' उत्तरपद। दोनों को मिलाकर **सामासिक पद** अथवा **समस्तपद** कहते हैं।

उत्तरपद और पूर्वपद के बीच में या तो योजक-चिह्न लगाना चाहिए। (जैसे सुख-दुःख, माता-पिता) या उन्हें मिलाकर एक में लिखना (दहीबड़ा, घोड़ागाड़ी) चाहिए। इन्हें अलग-अलग लिखना (सुख दुख, दही बड़ा, घोड़ा गाड़ी) ग़लत है।

अपने यहाँ पूर्वपद और उत्तरपद की सापेक्षिक प्रधानता के आधार पर समस्त पदों का वर्गीकरण किया गया है—

(१) पूर्वपद प्रधान—अव्ययीभाव

(२) उत्तरपद प्रधान—तत्पुरुष (कर्मधारय और द्विगु भी इसी में है)

(३) दोनों पद प्रधान—द्वंद्व

(४) दोनों पद अप्रधान—बहुब्रीहि (इसमें कोई तीसरा अर्थ प्रधान होता है)।

इस प्रकार समास मूलतः चार प्रकार के होते हैं। तत्पुरुष के ही दो उपभेदों (कर्मधारय औ द्विगु) को मिलाकर प्रायः छः समास कहे जाते हैं।

(१) **अव्ययीभाव**—इस समास में दो शब्दों से मिलकर जो शब्द बनता है, अव्य क्रियाविशेषण) का काम करता है, इसीलिए इसका नाम अव्ययीभाव है। अव्ययीभाव समास

प्रति + दिन = प्रतिदिन

Scanned by TapScanner

ऐसे ही यथासम्भव, यथाशीघ्र, यथास्थान, अनुदिन, एकाएक, धड़ाधड़, भरपेट, हाथोंहाथ आदि। संस्कृत अव्ययीभाव समासों में पहला शब्द अव्यय और दूसरा संज्ञा या विशेषण होता है, किन्तु इस समास के हिन्दी उदाहरणों में पहला शब्द अव्यय न होकर प्रायः संज्ञा होता है। जैसे—रातोंरात, घरघर, हाथोंहाथ, दिनोंदिन।

कई पुस्तकों में इस समास के कुछ और उदाहरण आजन्म, बेखटके, आजीवन, आमरण, व्यर्थ आदि दिए गए हैं। हिन्दी में इन्हें समास मानना अशुद्ध है, क्योंकि इनमें 'आ', 'वि' हिन्दी में उपसर्ग हैं, शब्द या पद नहीं। यह ध्यान देने की बात है कि 'आ', 'वि' आदि का हिन्दी शब्द की तरह स्वतन्त्र प्रयोग नहीं होता।

(२) **तत्पुरुष**—तत्पुरुष समास में पहला शब्द प्रायः संज्ञा या विशेषण तथा दूसरा सर्वदा संज्ञा होता है। इसमें दूसरा शब्द प्रधान होता है। 'तत्पुरुष' (तत् + पुरुष = वह आदमी) इसका एक अच्छा उदाहरण है। इसी आधार पर इसका यह नाम पड़ा है। पहले शब्द के भेद के आधार पर इस समास के तीन भेद होते हैं—

(क) यदि पहला शब्द संख्यावाचक विशेषण हो और समस्त पद-समूह का बोध कराए तो समास को द्विगु कहते हैं। जैसे—त्रिभुवन (तीन भुवन, पहला शब्द संख्यावाचक विशेषण, दूसरा संज्ञा), पंचवटी, छप्पय, त्रिलोक, चौमासा, नवग्रह, पंचतत्त्व, अठवारा, चवन्नी, त्रिफला, चौराहा, अठन्नी, पंसेरी, दुअन्नी, सप्तसिन्धु, दोपहर। 'द्विगु' का अर्थ है 'दो गायों या बैलों का समूह'। यह 'द्विगु' शब्द इसका एक अच्छा उदाहरण है, इसी आधार पर यह नया पड़ा है।

(ख) जिसमें विशेषण-विशेष्य अथवा उपमेय-उपमान हो, उसे कर्मधारय कहते हैं : विशेषण-विशेष्य-नीलकमल, सज्जन, महात्मा, महाजन, शुभागमन, नीलगाय, खुशबू, बदबू। उपमेय-उपमान—चरण-कमल (कमल-रूपी चरण), मृगनयन (मृग के समान नयन), चन्द्रमुख (चन्द्रमा के समान मुख), कमलनयन (कमल के समान नयन)। कर्मधारय का एक भेद मध्यम पदलोपी कर्मधारय होता है जिसमें मध्य का पद लुप्त हो जाता है : बनमानुष (बन में रहने वाला मनुष्य), घृतान्न (घृत-मिश्रित अन्न), गोबरगणेश (गोबर से बना गणेश), बैलगाड़ी (बैलों से खींची जाने वाली गाड़ी), गुरुभाई (गुरु के सम्बन्ध से भाई)। कर्मधारय के कुछ अन्य उदाहरण हैं : महाराजा, अल्पसंख्यक, अन्धविश्वास, अकालमृत्यु, परमानन्द, नराधम, शीतोष्ण। 'कर्मधारय' नाम में 'कर्म' का अर्थ है 'भेदक क्रिया' और 'धारय' का अर्थ है 'धारण करने वाला', अर्थात् कर्मधारय विशेषण की तरह भेदक क्रिया को धारण करता है, वह विशेषण की तरह संज्ञा की विशेषता बतलाता है। कहना न होगा कि विशेषण भी भेदक होता है। 'काला घोड़ा' में 'काला' शब्द 'घोड़ा' के अन्य घोड़ों से अलग कर रहा है। कर्मधारय में एक शब्द दूसरे की विशेषता बतलाता है।

(ग) तत्पुरुष के तीसरे भेद को व्यधिकरण तत्पुरुष या संक्षेप में केवल तत्पुरुष ही कहते हैं। इसमें पहला शब्द संज्ञा होता है, दूसरा शब्द (पद या खण्ड) प्रमुख होता है, और समास करने पर दोनों शब्दों के बीच के कारक-चिह्न या विभक्ति का लोप हो जाता है। लोप तथा पहले के शब्द के कारक के आधार पर इसके छः भेद होते हैं—

(१) **कर्मतत्पुरुष**—इसमें कर्म के कारक-चिह्न का लोप होता है। जैसे—ग्रन्थकर्ता (ग्रन्थ को करने वाला), जलपिपासु (जल को पीने की इच्छा रखने वाला), चिड़ीमार (चिड़ियों को मारने वाला), गँठकटा (गाँठ को काटने वाला), मुँहतोड़ (मुँह को तोड़ने वाला), गिरहकट (गिरह को काटने वाला), स्वर्गगत (स्वर्ग को गया

(२) **करण तत्पुरुष**—कपड़छन (कपड़े से छना), तुलसीकृत (तुलसी द्वारा किया हुआ), गुणहीन (गुण से हीन), ईश्वरदत्त (ईश्वर से दिया हुआ), रेखांकित (रेखा से अंकित), हस्तलिखित (हस्त से लिखित), मनमाना (मन से माना), धनहीन (धन से हीन), कष्टसाध्य, मदमाता, गुणयुक्त।

(३) **सम्प्रदान तत्पुरुष**—रसोईघर (रसोई के लिए घर), देशभक्ति (देश के लिए भक्ति), हथकड़ी (हाथ के लिए कड़ी), राहखर्च (राह के लिए खर्च), गुरुदक्षिणा (गुरु के लिए दक्षिणा), डाकगाड़ी (डाक के लिए गाड़ी), हवनसामग्री, रोकड़बही आरामकुर्सी।

(४) **अपादान तत्पुरुष**—ऋणमुक्त (ऋण से मुक्त), जातिभ्रष्ट (जाति से भ्रष्ट), पदच्युत (पद से च्युत), भयभीत (भय से भीत), देशनिर्वासित (देश से निर्वासित), देशनिकाला, विद्याहीन, धर्मभ्रष्ट।

(५) **सम्बन्ध तत्पुरुष**—रामानुज (राम का अनुज), सेनापति (सेना का पति), देवालय (देव का आलय), विद्यार्थी (विद्या का अर्थी), गंगातट, देवमूर्ति, जलपान, पशुपति, चायबगान, पनचक्की।

(६) **अधिकरण तत्पुरुष**—देशाटन (देश में अटन), घुड़सवार (घोड़े पर सवार), हरफ़नमौला (हर फन में मौला), दानवीर (दान में वीर), गृहप्रवेश (गृह में प्रवेश), आपबीती (आप पर बीती), शरणागत, कविराज, वनवास, कानाफूसी।

नञ् तत्पुरुष—जिसमें अभाव या निषेध अर्थ में शब्द के पूर्व अ या अन् हो। जैसे—अभाव, अलौकिक, अन्याय, अनाथ, अनाश्रित, असुन्दर, अपूर्ण, अनुदार, असम्भव, अहित। संस्कृत में यह समास था, किन्तु हिन्दी में समास नहीं माना जा सकता, क्योंकि 'अ', 'अन्' हिन्दी में उपसर्ग हैं। उनका शब्द की तरह स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता।

अलुक् समास—तत्पुरुष के जिन समस्त पदों में पूर्वपद में विभक्ति-चिह्न का लोप नहीं होता, उन्हें अलुक् समास कहते हैं। ये संस्कृत तत्सम शब्दों में ही मिलते हैं। विश्वंभर (विश्व को भरने वाला), सहसाकृत (एकदम से किया), वाचस्पति (वाणी का पति), मनसिज (मन में उत्पन्न), खेचर (आकाश में घूमने वाला)।

(३) **द्वन्द्व**—जिस समास में दो या तीन संज्ञाएँ हों और बीच से 'और', 'तथा' या इसी अर्थ के किसी दूसरे शब्द को निकालकर जोड़ दिया गया हो। इसमें दोनों पद प्रधान होते हैं। जैसे—माँ-बाप (माँ और बाप), भाई-बहन (भाई और बहन), अन्न-जल (अन्न और जल), सुख-दुःख (सुख और दुःख), तन-मन-धन, पाप-पुण्य, दाल-रोटी, चावल-दाल, काम-काज, नर-नारी, सीता-राम।

इसके तीन भेद होते हैं—

(क) इतरेतर द्वन्द्व—इस समास में योगसूचक समुच्चयबोधक अव्यय 'और' का लोप होता है : राधा-कृष्ण, राम-लक्ष्मण, गाय-बैल, सुख-दुःख, दाल-भात, सीता-राम, नाक-कान।

(ख) वैकल्पिक द्वन्द्व—इस समास में विकल्पसूचक समुच्चयबोधक 'या' 'अथवा' आदि का लोप रहता है। यह समास परस्पर-विरोधी भावों के बोधक शब्दों के योग से बनता है : शुद्धाशुद्ध, धर्माधर्म, छोटा-बड़ा, भला-बुरा, थोड़ा-बहुत।

(ग) समाहार द्वन्द्व—इस समास में प्रयुक्त पदों के अर्थ के अतिरिक्त उसी प्रकार का और भी अर्थ सूचित होता है : सेठ-साहूकार, घर-द्वार, दाल-रोटी, खाना-पीना, रुपया-पैसा, साँप-बिच्छू, कहा-सुनी, घास-फूस, नमक-रोटी।

प्रतिध्वनि वाले शब्द भी इसी में आते हैं। जैसे—आस-पास, अड़ोस-पड़ोस, भीड़-भाड़,

Scanned by TapScanner

पुस्तक-उस्तक। कभी-कभी शब्दों की पुनरुक्ति के द्वारा भी ऐसे सामासिक पद बनाए जाते हैं : भाग-दौड़, देखा-देखी।

(४) **बहुब्रीहि**—जिस समास में कोई भी शब्द प्रधान न हो और दोनों मिलकर किसी एक संज्ञा के विशेषण हों तथा उसी को व्यक्त करें, उसे बहुब्रीहि समास कहते हैं। जैसे : नीलकंठ—नीला है कंठ जिसका, अर्थात् शिव; अनन्त—जिसका अन्त न हो, अर्थात् ईश्वर; दशानन—दस हैं आनन जिसके, अर्थात् रावण; पीताम्बर (कृष्ण), चक्रधर (विष्णु), गजानन (गणेश), चतुर्भुज (विष्णु), घनश्याम (कृष्ण), इकतारा, बारहसिंहा। 'बहु + ब्रीहि' (= बहुत धानों वाला = संपन्न) इसका अच्छा उदाहरण है, इसी कारण यह नाम पड़ा है।

सामासिक शब्दों में अर्थभेद के कारण कभी-कभी समास-भेद भी हो जाता है। कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं—

रसोईघर—रसोई के लिए घर (सम्प्रदान तत्पुरुष)
रसोई का घर (सम्बन्ध तत्पुरुष)

नीलाम्बर—नीला कपड़ा (कर्मधारय)
नीला है कपड़ा जिसका (बहुब्रीहि)

पनचक्की—पानी से चलने वाली पक्की (करण तत्पुरुष)
पानी की चक्की (सम्बन्ध तत्पुरुष)।

हिन्दी में प्रायः दो शब्दों का समास होता है। 'तन-मन-धन', 'मनसा-वाचा-कर्मणा' या 'हर-फ़न-मौला'—जैसे तीन या अधिक शब्दों के समास अपवाद-स्वरूप ही मिलते हैं।

समास में ध्वनि-परिवर्तन

(क) हिन्दी समासों में यदि प्रथम शब्द का पहला स्वर दीर्घ हो तो वह प्रायः ह्रस्व ('आ' का 'अ'; 'ऊ', 'ओ' का 'उ' तथा 'ई' 'ए' 'इ') हो जाता है। जैसे—दुगुना (दो), पंचमेल (पाँच), सतनजा (सात), कनकटा (कान), नकटा (नाक), दुधमुँहा (दूध), मुँछमुड़ा (मूँछ), घुड़सवार (घोड़ा) आदि।

(ख) इसी प्रकार पहले शब्द के अन्तिम स्वर का कभी-कभी लोप भी हो जाता है। जैसे—घुड़दौड़ (घोड़ा), पनचक्की (पानी), कपड़छन (कपड़ा) अधपका (आधा) तथा छुटभैया (छोटा) आदि।

यों इन दोनों के अपवाद भी मिलते हैं : जैसे—घोड़ागाड़ी, काफीहाउस, हाथीखाना आदि। वस्तुतः अपवाद वे शब्द हैं, जिनके दोनों सदस्य पूरी तरह मिलकर एकाकार नहीं हुए हैं।

भाववाचक संज्ञाओं की रचना

भाववाचक संज्ञाएँ दो प्रकार की होती हैं : मूल (जैसे दया) तथा यौगिक (जैसे सुन्दरता)। यहाँ यौगिक भाववाचक संज्ञाओं की रचना ली जा रही है।

भाववाचक संज्ञाएँ निम्नांकित चार प्रकारों से बनती हैं—

(क) **जातिवाचक संज्ञा से**—मित्र-मित्रता, आदमी-आदमियत, मनुष्य-मनुष्यत्व, शत्रु-शत्रुता, पशु-पशुत्व, लड़का-लड़कपन।

(ख) **विशेषण से**—खट्टा-खटास, मीठा-मिठास, सुन्दर-सुन्दरता, सर्द—सर्दी, ठंडा-ठंडक, धार्मिक-धार्मिकता, राष्ट्रीय-राष्ट्रीयता, विद्वान्-विद्वत्ता।

Scanned by TapScanner

(ग) **क्रिया से**—उतरना-उतार, लिखना-लिखाई, कमाना-कमाई, धुलना-धुलाई, सिलना-सिलाई, काटना-कटाई, कातना-कताई, छटपटाना-छटपटाहट, बहना-बहाव।

(घ) **सर्वनाम से**—अपना-अपनत्व अपनापा, मम-ममता, ममत्व, अहं-अहंकार, आप-आपा।

विशेषणों की रचना

विशेषण दो प्रकार के होते हैं : मूल (जैसे सुन्दर लाल, सफ़ेद) तथा यौगिक (जैसे जापानी, साप्ताहिक, चालू)। यहाँ यौगिक विशेषणों की रचना ली जा रही है।

हिन्दी में विशेषण की रचना प्रत्यय, सम्बन्ध-चिह्न तथा उपसर्गों आदि की सहायता से होती है। कुछ को उदाहृत किया जा रहा है—

संज्ञा + आ : भूख-भूखा, नील-नीला, प्यास-प्यासा, ठंड-ठंडा।

संज्ञा + आलु : कृपा-कृपालु, दया-दयालु, शंका-शंकालु, ईष्या-ईर्ष्यालु।

संज्ञा + आ + पद : हास्य, विवाद।

संज्ञा + इक : इक प्रत्यय जोड़ने में प्रायः पहले अक्षर के स्वर को निम्नांकित रूप में परिवर्तित कर देते हैं : अ > आ : समाज—सामाजिक, पक्ष—पाक्षिक, शरीर—शारीरिक, नगर—नागरिक, धर्म—धार्मिक, अर्थ—आर्थिक, कल्पना—काल्पनिक। इ > ऐ : दिन—दैनिक, इतिहास—ऐतिहासिक। ई>ए : नीति—नैतिक। ए > ऐ : सेना—सैनिक, देह—दैहिक, वेद—वैदिक। उ > ओ : पुराण—पौराणिक। ऊ>औ : मूल—मौलिक, भूगोल—भौगोलिक, भूत—भौतिक। ओ>औ : लोक—लौकिक। अपवादतः कुछ शब्दों में स्वर अपरिवर्तित भी रहते हैं : क्रम—क्रमिक; आ, ऐ, औ आदि अन्य स्वर हों तो अपरिवर्तित रहते हैं : आत्मा—आत्मिक, साहित्य—साहित्यिक।

संज्ञा + इत : अंक—अंकित, अनुवाद—अनुवादित (संस्कृत व्याकरण के अनुसार शुद्ध शब्द अनूदित), पुष्प—पुष्पित, फल—फलित, अपमान—अपमानित।

संज्ञा + इया : कलकत्ता—कलकतिया, बम्बई—बम्बइया, पूरब—पुरबिया, कनौज,क़नौजिया।

संज्ञा + ई : चीन—चीनी, जापान—जापानी, देश—देशी, लालच—लालची, अभिमान—अभिमानी, पाप—पापी, कोढ़—कोढ़ी, ज्ञान—ज्ञानी, साहस—साहसी, शहर—शहरी, देहात—देहाती, धन—धनी, दुःख—दुःखी, सुख—सुखी।

संज्ञा + ईय : भारत—भारतीय, तट—तटीय, जाति—जातीय, पूर्व—पूर्वीय, स्वर्ग—स्वर्गीय स्मरण—स्मरणीय, यूरोप—यूरोपीय, स्थान—स्थानीय, ईश्वर—ईश्वरीय।

संज्ञा + ईला : रंग—रंगीला, चमक—चमकीला, रस—रसीला।

संज्ञा + एरा : मामा—ममेरा, चाचा—चचेरा, फूफा—फुफेरा, मौसा—मौसेरा, लूट—लुटेरा।

संज्ञा + ईन : कुल—कुलीन, रंग—रंगीन, नमक—नमकीन, शौक—शौकीन, काल—कालीन (पुराकालीन)।

संज्ञा + का : राम—राम का, भारत—भारत का, आदमी—आदमी का, पशु—पशु का।

विश्वास—विश्वसनीय ... —दयनीय,

संज्ञा + वाला : पैसा—पैसेवाला, रुपए—रुपएवाला, रिक्शा—रिक्शेवाला, दूध—दूधवाला, गाड़ी—गाड़ीवाला, चाट—चाटवाला।

संज्ञा + शील, शाली : क्षमा—क्षमाशील, क्रिया—क्रियाशील, विनय—विनयशील, भाग्य—भाग्यशाली, प्रतिभा—प्रतिभाशाली, शक्ति—शक्तिशाली, बल—बलशाली।

निः + संज्ञा : लज्जा—निर्लज्ज, धन—निर्धन, भय—निर्भय, दया—निर्दय, बल—निर्बल, जन—निर्जन, दोष—निर्दोष।

ला + संज्ञा : जवाब—लाजवाब, वारिस—लावारिस, पता—लापता, इलाज—लाइलाज।

दु + संज्ञा : नाली—दुनाली, धार—दुधारी।

बे + संज्ञा : ईमान—बेईमान, चारा—बेचारा, होश—बेहोश, क़सूर—बेक़सूर।

स + संज्ञा : फल—सफल, जल—सजल, जीव—सजीव, चेत—सचेत।

दुः + संज्ञा : जन—दुर्जन, बल—दुर्बल।

क्रिया + आ : कट्—कटा (कटा पेड़), फट्—फटा (फटा कपड़ा)।

क्रिया + त, आ, ई, ए : बह—बहता (पानी), दौड़—दौड़ता (लड़का)।

क्रिया + ओड़, ओड़ा : हँस—हँसोड़, भग—भगोड़ा।

क्रिया + अक्कड़ : भूलना—भुलक्कड़, पीना—पियक्कड़।

क्रिया + वाला : खाना—खानेवाला, ठगना—ठगनेवाला।

क्रिया + आऊ : खाना—खाऊ, उड़ाना—उड़ाऊ।

क्रिया + ऊ : (प्रथम अक्षर में 'अ' का 'आ' हो जाता है) : चलना—चालू, लगना—लागू।

सर्वनाम + रा, का, ना : मेरा, तेरा, हमारा, तुम्हारा, उसका, उनका, इसका, इनका, अपना।

सर्वनाम + वाला : अपना—अपनेवाला, तेरा—तेरेवाला।

सर्वनाम + सा : तुम-सा, उस-सा, मुझ-सा, तुझ-सा, ऐसा, वैसा, जैसा, कैसा।

सर्वनाम + ना, ने : इतना, उतना, जितना, कितना, इतने, उतने, जितने, कितने।

विशेषण + वाला : लाल—लालवाला, काला—कालेवाला, बड़ा—बड़ावाला, बड़ेवाला।

समस्त पद : दो विशेषणों के मेल से—टेढ़ा-मेढ़ा, चलता-फिरता, चलता-पुरज़ा।

क्रियाविशेषणों की रचना

रचना की दृष्टि के क्रियाविशेषण दो प्रकार के होते हैं : मूल (कल, आज, ऊपर) तथा यौगिक। यहाँ यौगिक क्रियाविशेषण लिए जा रहे हैं—

(१) सर्वनाम + प्रत्यय (हाँ, ब, धर, यों, ऐसे)—

सर्वनाम	सर्वनाम अंश	स्थान	काल	दिशा	रीति
यह	य, अ, इ, ऐ	यहाँ	अब	इधर	यों, ऐसे
वह	व, उ	वहाँ	—	उधर	वैसे
जो	ज	जहाँ	जब	जिधर	ज्यों, जैसे
कौन	क	कहाँ	कब	किधर	कैसे
तिस	त	तहाँ			

(२) **संज्ञा तथा सर्वनाम + परसर्ग**—घर में, मज़े में, रास्ते में, झूठ-मूठ में, रात में, दिन में, आसमान पर, घोड़े पर, हाथ पर, समय पर, मौक़े पर, मजे से, ज़ोर से, धीरे से, आहिस्ते से, तेज़ी से, विनम्रता से, कमाल का, सवेरे का, गज़ब का, आख़िर को, बाद को, अंत को।

(३) **संज्ञा + प्रत्यय**—तत्त्वतः अन्ततः, अंशतः, शब्दशः अक्षरशः, ज़ोरदार। श्रद्धापूर्वक, ध्यानपूर्वक, न्यायपूर्वक, विनयपूर्वक, आख़िरकार।

(४) **संज्ञा + निपात**—अनन्तकाल तक, घर तक, रात तक, शहर तक, घड़ी भर, जीवन भर, दिन भर, जी भर, पल भर, पेट भर, मृत्यु-पर्यन्त, जीवन-पर्यन्त।

(५) **संज्ञा + पूर्वकालिक कृदन्त**—कृपा करके, भक्ति करके, धर्म करके, मेहरबानी करके, समय पाकर, घर जाकर, स्कूल आकर के।

(६) **द्विरुक्त संज्ञा**—अंगुल-अंगुल, जौ-जौ, क़दम-क़दम, शहर-शहर, घर-घर, नगर-नगर, तिल-तिल, गाँव-गाँव, घर-घर, दिन-दिन, रात-रात, पग-पग, सवेरे-सवेरे, सुबह-सवेरे, क्षण-क्षण।

(७) **असमान संज्ञा द्विरुक्त**—साँझ-सवेरे, दिन-रात, घर-बाहर, देश-विदेश।

(८) **सप्रत्यय द्विरुक्त**—हाथों-हाथ, दिनों-दिन, रातों-रात, घरों-घर।

(९) **सशब्द द्विरुक्त**—रू-ब-रू, क्षण-प्रति-क्षण, दिन-प्रतिदिन।

(१०) **संज्ञा + शब्द**—समयानुसार, आज्ञानुसार, इच्छानुसार, आवश्यकतानुसार, कथनानुसार।

(११) **द्विरुक्त विशेषण**—एकाएक, ठीक-ठीक, साफ़-साफ़, ऊँच-नीच, भला-बुरा, उल्टा-सीधा, एक-एक, साथ-साथ, थोड़ा-बहुत।

(१२) **विशेषण + परसर्ग**—मुफ्त में, बेकार में, व्यर्थ का, बेकार का।

(१३) **विशेषण + प्रत्यय**—अधिकतर, ज्यादातर, अन्यत्र, सर्वत्र, एकत्र, मजबूरन, ज़बरन, नीचे, दाएँ, बाएँ, खड़े, धीमे, धीरे, मुख्यतः, संभवतः, अधिकांशतः, प्रत्यक्षतः, परोक्षतः साधारणतया, मुख्यतया, प्रमुखतया।

(१४) **विशेषण में 'तरह', 'भाँति', 'प्रकार' शब्दों के मेल से**—अच्छी तरह, बुरी तरह, भली-भाँति, ठीक प्रकार, ठीक तरह।

(१६) **सार्वनामिक विशेषणों की द्विरुक्ति से**—कितना-कितना, कैसा-कैसा, कैसी-कैसी, कैसे-कैसे, जैसी-जैसी, जैसे-तैसे, ऐसा-वैसा, जैसे-जैसे।

(१७) **क्रियाविशेषण में संज्ञा के मेल से**—यथाक्रम, यथाशक्ति, हरदम, हरघड़ी, प्रतिदिन, प्रतिपल।

(१८) **क्रियाविशेषण के दोहरे प्रयोग से**—धीरे-धीरे, ठीक-ठीक, आगे-पीछे, आर-पार, आमने-सामने, संग-संग, साथ-साथ, खड़े-खड़े, कल-परसों, हौले-हौले, यदा-कदा, रोज़-रोज़, पहले-पहल, तरह-तरह, ज़रा-ज़रा, आस-पास।

(१९) **क्रियाविशेषण के दोहरे प्रयोग के बाद पूर्वकालिक कृदन्त के मेल से**—ज्यों-ज्यों करके, त्यों-त्यों करके।

Scanned by TapScanner

(२०) **क्रियाविशेषण + परसर्ग**—कल को, आज को, कब का।

(२१) **दो क्रियाविशेषणों के बीच में 'न' और 'ही' निपात रखने से**—न—कहीं-न-कहीं, कभी-न-कभी, कोई-न-कोई, कुछ-न-कुछ, ही—इधर-ही-इधर; भीतर-ही-भीतर, अन्दर-ही-अन्दर, नीचे-ही-नीचे, ऊपर-ही-ऊपर।

(२२) **पूर्णकालिक कृदन्त** : (क) धातु + कर (राम खाकर आया है); (ख) धातु + के (राम खा के आया है); (ग) धातु + कर + के (राम खाकर के आया है); (घ) धातु + धातु + कर (राम खा-पीकर आया है); (ङ) धातु + धातु + के (राम खा-पी के आया है); (च) धातु + धातु + कर + के (राम खा-पीकर के आया है)।